पल्लव

भाग – 3

शिक्षा (प्राथमिक) विभाग, असम सरकार

वंदे मातरम्

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!!
सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम् वंदे मातरम्!
शुभ्र-ज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्।
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्!
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!!

– बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

Copyright SCERT Assam not to be republished

पल्लव

भाग–3

(आठवीं कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक)

प्रस्तुतिकरण

राज्यिक शिक्षा–गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम

नाम : .....

विद्यालय का नाम : .....

कक्षा : ..... क्रमांक : .....

Copyright © SCERT, Assam not be republished

PALLAV, BHAG - III : A textbook cum workbook for class VIII in Hindi for Non-Hindi Medium Schools, developed by State Council of Educational Research and Training (SCERT) and Published by Asom Rastrabhasha Prachar Samiti, Guwahati - 32, Assam, Approved by the Government of Assam Vide No. AEE.256/2011/Pt /8 Dispur, the 17th November, 2011.

Free Textbook

All right reserved : No reproduction in any form of this book, in part (except for brief quotation in critical articles or reviews), may be made without written authorization from the publisher.

© : SCERT, Assam.

प्रथम प्रकाशन : 2011
संशोधित संस्करण : 2012
पुनर्मुद्रण : 2013
पुनर्मुद्रण : 2014
पुनर्मुद्रण : 2015
पुनर्मुद्रण : 2016
पुनर्मुद्रण : 2017
पुनर्मुद्रण : 2018
पुनर्मुद्रण : 2019
पुनर्मुद्रण : 2020
पुनर्मुद्रण : 2021
पुनर्मुद्रण : 2022

प्रकाशक : **असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी**

शिक्षा अधिकार कानून – 2009 के अनुसार बच्चों को मातृभाषा सीखने के साथ-साथ क्लासिकल भाषाएँ सीखने का भी अधिकार है। अत: इसी बात को ध्यान में रखते हुए एस.सी.ई.आर.टी, असम ने नई पाठ्यचर्या प्रस्तुत की है, जिसमें त्रिभाषा नीति में कुछ संशोधन किया गया है। इसके अनुसार विद्यार्थी संपूर्ण तीसरी भाषा (100%)अथवा तीसरी भाषा (50%)+अन्य चौथी भाषा (50%) ले सकते हैं। 50% अंश वाले विद्यार्थियों के लिए किन्हीं 8 पाठों को पढ़ना अनिवार्य है।

(टैक्स्ट पेपर 70 जीएसएम और कवर पेपर 165 जीएसएम पर मुद्रित)

मुद्रक : अरोरा फाइन आर्ट्स
बामुनीमैदाम, गुवाहाटी-21

Copyright- SCERT, Assam not to be republished

डॉ. रनोज पेगु, एम.बी.बी.एस.
मंत्री, असम

सत्यमेव जयते

शिक्षा, मैदानी जनजाति और
पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग

संदेश

विद्यालयीन शिक्षा का आवश्यक हिस्सा है – पाठ्यपुस्तक। विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक के माध्यम से ही ज्ञान अर्जित करते हैं। विद्यार्थी ही हमारे राज्य व देश के भविष्य के वास्तविक संसाधन हैं। मानव सभ्यता की धारा शिक्षा द्वारा ही गतिमान होती है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही वर्तमान में हमारी सरकार ने शिक्षा क्षेत्र को सर्वाधिक महत्व दिया है।

मौजूदा राज्य सरकार ने विद्यार्थियों को शैक्षणिक सफलता दिलाने के साथ-साथ उनके जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति तथा राज्य के कल्याण के लिए अनेक महत्वाकांक्षी योजनाओं को लागू किया है। **प्रज्ञान भारती** के तहत नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत **क वर्ग** से **द्वादश वर्ग** तक के विद्यार्थियों को नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक अविराम रूप से दी जा रही है। सन् 2020 से हमारी सरकार ने इस योजना को स्नातक वर्ग तक विस्तारित किया है। समूचे राज्य में उच्चतर माध्यमिक और स्नातक वर्गों में नामांकन शुल्क की माफी की घोषणा होने से एक सकारात्मक पहल की शुरुआत हुई है।

समाज में आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के शिक्षार्थियों को मैट्रिक एवं उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के शुल्कों को माफ करने की व्यवस्था की जा रही है। साथ ही माध्यमिक स्तर पर भी विद्यार्थियों की पोशाकों (यूनीफॉर्म) की आपूर्ति के लिए सरकार ने आवश्यक व्यवस्था की है। **आनंदराम बरुवा योजना** के जरिए मैट्रिक पास मेधावी छात्र-छात्राओं को **लैपटॉप** या उसके बदले में आर्थिक अनुदान देने की व्यवस्था की गई है।

विद्यार्थियों के शिक्षण-मार्ग को सुगम बनाने के महान उद्देश्य से कार्यान्वित **प्रज्ञान भारती** योजना के तहत नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण जैसे पवित्र कार्यों के निष्पादन में योगदान दे रहे राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम माध्यमिक शिक्षा परिषद्, असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संसद तथा असम राज्यिक पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन निगम एवं असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को मैं धन्यवाद देता हूँ। ज्ञानार्जन की दिशा में हमारे विद्यार्थी निरंतर परिश्रम करते हुए राष्ट्र के संसाधन के रूप में अपने आप को निर्मित करने में सक्षम होंगे। इसी आशा के साथ मैं उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

(डॉ. रनोज पेगु)
शिक्षा मंत्री, असम

Copyright- SCERT, Assam
Not to be republished

पाठ्यपुस्तक की प्रस्तुति से संबंधित व्यक्ति

कार्यशाला में शामिल व्यक्तिगण :

श्री अजयेंद्र त्रिवेदी : वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा विभाग, यूको बैंक, जोनल ऑफिस, गुवाहाटी
श्री गोलोक चंद्र डेका : व्याख्याता, गुवाहाटी महाविद्यालय, गुवाहाटी
श्री अरविंद कुमार शर्मा : व्याख्याता, बी. बरुवा कॉलेज, गुवाहाटी
श्री बिपुल दास : व्याख्याता, संगीत महाविद्यालय, रवींद्र भवन
श्री अजय बर्मन : शिक्षक, संगीत विभाग, कॉटन कॉलेजिएट एच.एस. स्कूल
श्री कुल प्रसाद उपाध्याय : प्राध्यापक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार
श्री रामनाथ प्रसाद : सहायक साहित्य सचिव, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी
श्री हेमंत कुमार राभा : विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, नारंगी आंचलिक महाविद्यालय
श्री पुण्यव्रत बरदलै : व्याख्याता, हिंदी विभाग, नारंगी आंचलिक महाविद्यालय
श्री दिलीप चंद्र शर्मा : शिक्षक, कॉटन कॉलेजिएट हायर सेकेंडरी स्कूल, गुवाहाटी
श्री सुरेश सिंह : शिक्षक, टी.आर.पी. हिंदी हाई स्कूल, मालीगाँव

पुनरीक्षण :

डॉ. अच्युत शर्मा : एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय
डॉ. अमूल्य बर्मन : पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, कॉटन कॉलेज, पानबाजार, गुवाहाटी
श्री अजयेंद्र त्रिवेदी : वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा, यूको बैंक, जोनल ऑफिस, गुवाहाटी
श्री गोलोक चंद्र डेका : व्याख्याता, गुवाहाटी महाविद्यालय, गुवाहाटी
श्री हेमंत कुमार राभा : विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, नारंगी आंचलिक महाविद्यालय

भाषा संशोधन :

श्री रामनाथ प्रसाद : सहायक साहित्य सचिव, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

विशेष सहयोग :

डॉ. अंजलि काकति : व्याख्याता, हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी

संकलन, संपादन एवं अलंकरण :

डॉ. सुष्मिता सूत्रधर दास : विभागाध्यक्ष, पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यचर्या विभाग, एस.सी.ई.आर.टी, असम
श्रीमती सुवला दत्त शइकीया : व्याख्याता, पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यचर्या विभाग, एस.सी.ई.आर.टी, असम
श्री करबी दास : व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी, असम

सी.आर.सी. और इलास्ट्रेशन :

श्री जयंत भागवती, श्री विचित्र शर्मा

सलाहकार

डॉ. सुष्मिता सूत्रधर दास
विभागाध्यक्ष, पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यचर्या विभाग,
एस.सी.ई.आर.टी, असम

समन्वयक

श्रीमती सुवला दत्त शइकीया
व्याख्याता, पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यचर्या विभाग,
एस.सी.ई.आर.टी, असम

डी.टी.पी.

□ लाचित दास □ श्यामंतक डेका □ मुश्ताक अली

Copyright-SCERT Assam not be republished

आमुख

असम राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.) ने तृतीय भाषा की उपयोगिता तथा विद्यार्थियों की आयु-सीमा को ध्यान में रखते हुए आठवीं कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक पल्लव, भाग-3 तैयार की है। सरकार ने अधिसूचना संख्या - PMA.103/2011/5 दिनांक Dispur, the 27th May, 2011 के अनुसार शैक्षिक वर्ष 2011 से पाँचवीं कक्षा को निम्न प्राथमिक स्तर में शामिल किया है। इस तरह उच्च प्राथमिक स्तर पर छठी से आठवीं तक हिंदी शिक्षण अनिवार्य है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 को ध्यान में रखते हुए राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम ने तृतीय भाषा शिक्षण के लिए नई पाठ्यचर्या का निर्माण किया है। पाठ्यचर्या में सन्निविष्ट संस्तुतियों के आधार पर हिंदीतर भाषी विद्यार्थियों के लिए उच्च प्राथमिक स्तर पर इस पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है।

विद्यार्थियों के सर्वांगीन विकास के लिए पाठ्यपुस्तक को योग्यता आधारित, कार्य-कलाप आधारित एवं आनंददायक बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक को अधिक आकर्षक बनाने के लिए यथास्थान रंग-बिरंगे चित्रों का समावेश किया गया है। साथ ही विषयवस्तु को केवल रटने पर जोर न देकर अपेक्षित ज्ञान एवं कौशलों को प्राप्त करने पर अधिक महत्व दिया गया है।

उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में प्रतिष्ठित कवि-साहित्यकारों के लोकप्रिय एवं बहुप्रचलित गीत, कविताएँ, कहानियाँ आदि संकलित किए गए हैं। उनका हम श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षक-शिक्षिकाओं, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अनुभवी व्यक्तियों, यूको बैंक जोनल ऑफिस, राजभाषा विभाग सहित अनेक शैक्षिक संस्थानों के व्यक्तियों के सहयोग से कार्यशालाओं के जरिए यह पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। जिन व्यक्तियों के अथक प्रयत्न से प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक को अध्येता-वर्ग के सामने लाना संभव हुआ है, उनके प्रति परिषद् आभार व्यक्त करती है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के प्रणयन में असम सर्वशिक्षा अभियान मिशन से प्राप्त आर्थिक सहायता के लिए हम आभारी हैं।

सरकार के निर्देशानुसार निर्धारित अवधि के भीतर ही पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है। अत: पाठ्यपुस्तक में कुछ अनिच्छाकृत त्रुटियाँ रह जाना स्वाभाविक है। इसके लिए मान्य शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं पाठकों के सुझाव आमंत्रित हैं।

निरदा देवी

(डॉ. निरदा देवी)
निदेशक
राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम

काहिलीपाड़ा, गुवाहाटी
दिसम्बर, 2020

Copyright SCERT, Assam not to be republished

पाठ्यपुस्तक से संबंधित दो बातें

(*शिक्षक-शिक्षिकाओं के प्रति*)

असम सरकार ने सन् 2011 से पाँचवीं कक्षा को उच्च प्राथमिक स्तर से हटाकर निम्न प्राथमिक स्तर में शामिल कर दिया है और उच्च प्राथमिक स्तर में छठी कक्षा से आठवीं तक की कक्षाओं को अंतर्भुक्त किया है। अत: विद्यार्थियों की आयु को ध्यान में रखकर 'पल्लव, भाग-3' नामक इस पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। नई राज्यिक पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने के प्रयास हैं। इसलिए हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें। इस पाठ्यपुस्तक का मुख्य उद्देश्य है- दैनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी भाषा को समझने तथा बोलने की क्षमता का विकास करना। साथ ही दैनिक जीवन में आवश्यक वार्तालाप, संभाषण, पारिवारिक पत्र, आवेदन-पत्र आदि के लिए उपयुक्त भाषा व्यवहार में दक्षता बढ़ाना।

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर 'पल्लव, भाग-3' में विभिन्न प्रकार के कुल चौदह पाठ शामिल किए गए हैं। इनमें गीत, कविताएँ, कहानियाँ, वर्णनमूलक लेख, निबंध आदि हैं। व्यावहारिक क्षेत्रों में हिंदी भाषा के ज्ञान का विकास करने के लिए विद्यार्थी को प्रस्तुत करना अतीव जरूरी है। विद्यार्थियों को अपनी और देश तथा स्थानीय संस्कृति के साथ-साथ पड़ोसी भाषा-संस्कृति के प्रति जागरूक और श्रद्धाशील बनाने की आवश्यकता पर ध्यान रखकर पाठ प्रस्तुत किए गए हैं। राष्ट्रीय समन्वय, परंपरा तथा सांप्रदायिक ऐक्य पर विशेष ध्यान दिया है।

विद्यार्थियों के मनोविज्ञान के आधार पर प्रत्येक पाठ के प्रारंभ में अलग-अलग पृष्ठभूमि रखी गई है और नए-पुराने कौशलों एवं शैलियों का प्रयोग किया गया है, ताकि सभी पाठों के शिक्षण-कार्य के दौरान इन बातों पर जरूर ध्यान रहे ।

पाठ की विषयवस्तु को आनंदप्रद बनाने के साथ प्रत्येक पाठ में दी गई अभ्यास-माला को आकर्षक बनाने की कोशिश की गई है। अभ्यास-मालाओं में प्रश्नों को आकर्षक तथा मनोग्राही ढंग से पेश करने का प्रयास किया गया है। इनमें पाठ आधारित प्रश्नों के अलावा सामूहिक चर्चा, विषय, परियोजना और हमारे चारों ओर के वातावरण के संबंध में ज्ञान अर्जित करने की भी सुविधा दी गई है। इनके अतिरिक्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ विभिन्न जन संचार माध्यमों के जरिए विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्ति में योगदान देंगे।

'पल्लव, भाग-3' में अभ्यास-मालाओं के जरिए व्याकरण-शिक्षण की व्यवस्था रखी गई है। पाठों में दी गई अभ्यास-मालाओं में क्रमानुसार व्याकरण-शिक्षण की व्यवस्था है। व्याकरण-शिक्षण में प्रायोगिक व्यवस्था को अधिक महत्व दिया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में 'आओ, जान लें' शीर्षक के अंतर्गत व्याकरणिक तथ्यों की व्याख्या करने के अलावा विद्यार्थियों के सामूहिक ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास भी है। शिक्षक-शिक्षिका अपनी सुविधा और समय के अनुसार पर्याप्त उदाहरणों से विद्यार्थियों के प्रायोगिक ज्ञान को बढ़ाने की व्यवस्था करें तो अधिक लाभप्रद होगा। तीसरी भाषा हिंदी के विद्यार्थियों के लिए आठवीं कक्षा में व्याकरण की अलग पाठ्यपुस्तक की व्यवस्था नहीं है। अत: सभी पाठों के साथ व्याकरण-शिक्षण की व्यवस्था है। शिक्षक-शिक्षिकागण अपने अनुभव से विद्यार्थियों के 'व्याकरणिक ज्ञान' को बढ़ाने का प्रयास अवश्य करें।

हिंदी में कुछ शब्दों की वर्तनी वैकल्पिक रूपों में प्रचलित है, जैसे- हिंदी/हिन्दी, परंतु/परन्तु, गए/गये, गई/गयी, लिए/लिये, चाहिए/चाहिये, गड्ढे/गडढे, खट्टा/खटटा आदि। प्रस्तुत पुस्तक में सरलता एवं एकरूपता की खातिर हिंदी, परंतु, गए, गई, चाहिए, गड्ढे, खट्टा- जैसे रूपों का प्रयोग किया गया है।

शिक्षक-शिक्षिकागण पाठों में संलग्न 'शिक्षण-संकेत' पर ध्यान दें और संकेत के अनुसार सीखने में सहायता करें। भाषा-ज्ञान, वार्तालाप की क्षमता आदि बढ़ाने के उद्देश्य से शिक्षक-शिक्षिकाओं को सामूहिक चर्चा या पाठ पढ़ाते समय हिंदी में बातचीत करना अत्यंत आवश्यक है। वे विद्यार्थियों को हिंदी में बातचीत करने का प्रोत्साहन अवश्य दें। सभी पाठों के अंत में विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखकर पाठ में प्रयुक्त नए शब्दों के अर्थ दिए गए हैं।

अत: व्यवस्थागत सुधारों और प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के लिए आपकी टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत है।

© SCERT Assam

कहाँ क्या है

	आमुख	V
	पाठ्यपुस्तक से संबंधित दो बातें	VI
1.	भारत हमको जान से प्यारा है (गीत)	8 - 11
2.	कश्मीरी सेब	12 - 19
3.	मैडम मेरी क्यूरी	20 - 27
4.	जलाशय के किनारे कुहरी थी (कविता)	28 - 31
5.	उससे न कहना (एकांकी)	32 - 41
6.	भारतीय संगीत की एक झलक	42 - 51
7.	पहली बूँद (कविता)	52 - 56
8.	भारत दर्शन	57 - 67
9.	जैसे को तैसा	68 - 75
10.	गोकुल लीला (कविता)	76 - 80
11.	भारत की भाषिक एकता	81 - 89
12.	बाढ़ का मुकाबला	90 - 96
13.	मेरा नया बचपन (कविता)	97 - 102
14.	मैं हूँ महाबाहु ब्रह्मपुत्र	103 - 108
	पाठों में निहित योग्यताएँ	109-112

Copyright - SCERT, Assam
not be republished